2

यीशु के काम करना

(यूहन्ना 14)

''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, बरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं। और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो''
(आयतें 12-14)।

जैसे हमारे प्रभु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले अपने चेलों को ऊपर अटारी पर उत्साहित किया, ताकि वे उसके काम को इस संसार में बढ़ाते रहें। यीशु अपने जीवन को अन्तिम रूप दे रहा था, जैसे हर विश्वासी पुरुष को करना चाहिए; वह हर चीज़ को व्यवस्थित रूप दे रहा था ताकि उसके जाने के बाद पूरे तीन साल काम करते हुए इन चेलों को अपने जीवन और उद्देश्य को विस्तार देने के लिए तैयार किया। वह एक उद्देश्य को अंजाम देने के लिए आया था, एक आंदोलन की शुरुआत करने, जिसे हम ''मसीहियत'' कहते हैं। उसके कल्याणकारी कामों की किरणों को उसके दोबारा आने तक इस संसार में छा जाना था।

उसने अपने चेलों को ऐसा कौन सा विशेष काम दिया था, जो उन्हें उसके लिए करना था?

उसके कामों को स्वाभाविक ढंग की तरह

चेलों के काम करने का स्वाभाविक ढंग वैसा ही होगा जैसा यीशु का था। ''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, बरन इन से भी बड़े काम करेगा'' (14:12क)। जब हम यीशु की ओर ध्यान करते हैं, तो उनकी सच्चाई महिमा और उनसे होने वाले प्रभाव के बारे में सोचकर हम हैरान हो जाते हैं। वचन में हम उसे अन्धों की आंखें खोलते हुए, कोढ़ियों को चंगा करते हुए, मुर्दों को जिलाते हुए और आदर्श उपदेश देते हुए देखते हैं। तो यह कहने से क्या तात्पर्य है कि उसके मानने वाले भी उसके जैसे काम करेंगे?

उसके द्वारा उन्हें दिया गया उत्साह दो दिशाओं में चला गया। पहले तो वह यह बात कर रहा था कि चेले बाद में क्या करेंगे-वे आश्चर्यकर्म करेंगे और वे उपदेश जो वे पवित्र आत्मा के द्वारा देंगे। इसके अलावा, वह मसीही लोगों के सब भले कामों की बात सोच रहा था, जिनका स्वाभाविक ढंग वैसा ही होना चाहिए, जैसे स्वयं उसका था। यीशु के सारे काम परमेश्वर और अनन्त जीवन की ओर ले जाते थे, यानी जिधर वह ले जाना चाहता था। उसके मानने वालों को इस संसार के खत्म होने तक इस प्रकार के काम करते रहना आवश्यक है। यीशु के काम अपने सदा तक रहने वाले अपने मूल उद्देश्य में आत्मिक और शैतान के कामों को नाश करने में सक्रिय हैं।

गुणवत्ता में उसके कामों की तरह

गुणवत्ता में चेलों के काम यीशु द्वारा किए गए कामों से श्रेष्ठ हो सकते हैं। ''ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं'' (14:12ख)। मसीह के प्रेरित और उसके बाद के चेले यीशु से बड़े-बड़े काम कैसे कर सकते थे?

मसीही लोगों ने यीशु द्वारा दिए गए उद्धार के बारे में दूसरों को बताकर बड़े-बड़े काम करने थे। बाद में इन कामों ने यीशु द्वारा दिए गए उद्धार को दूसरों के जीवन में पक्का करना था। पापों की क्षमा मिलनी थी, आत्माओं का छुटकारा होना था और लोगों को परमेश्वर की संगति में लाया जाना था। परिणाम हमेशा उन बुनियादी कामों से बड़े ही होते हैं, जिनके कारण वे परिणाम मिल पाए। वास्तविकता उस तैयारी से जिससे वह वास्तविकता बनती है, बड़ी ही होती है। इनमें से बड़ा कौन है: नौ महीने तक कोख में रखने वाली स्त्री या वह बच्चा, जो इस संसार में आया और अद्‌भुत व्यक्ति के रूप में बड़ा हो रहा है? इनमें बड़ा कौन है: खेत को बुआई और कटाई के लिए तैयार करना या फिर वह गेहूं जो रोटी बनाने के काम आती है, जिसे खाकर मनुष्य बड़ा होता है?

पिन्तेकुस्त के दिन यीशु द्वारा किए गए काम के परिपूर्णता तक पहुंचने के द्वारा सुसमाचार पूरे ज़ोर के साथ दिया गया। तीन हज़ार लोगों ने इसे ग्रहण किया और उन्होंने उद्धार पाया, बहुतायत का जीवन इस संसार में और आने वाले अनन्त जीवन संसार में। उद्धार को पक्का करने के लिए यीशु ने जो कार्य किया, वह बड़ा था, इसमें कोई संदेह नहीं-लेकिन उसी सुसमाचार के द्वारा यरूशलेम में लोगों को बचाए जाने के लिए प्रेरित करना उससे भी बड़ा काम था, जिससे वह काम पूरा हुआ, जिसका यीशु ने आरम्भ किया था।

अधिकार में उसके कामों जैसा

अधिकार में चेलों द्वारा किए गए काम यीशु की सेवा के रूप में किए जाने थे। उन्हें काम करना था, क्योंकि वह पिता के पास जा रहा था (14:12ग)। उसने परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य को अंजाम दे दिया था। प्रेरितों और उसके दूसरे सारे चेलों को उसके मिशन को आगे ले कर जाना था। उसने अपने मिशन की घोषणा और इसे सम्भव भी बनाया, लेकिन उसने अपने चेलों को इसे पूरा करने को कहा। उसके बड़े अधिकार से उन्होंने बाहर जाकर दूसरों को सुसमाचार सुनाया। ऐसा करते हुए वे लोगों के पास यीशु के प्रतिनिधि बनकर गए।

सामर्थ में उसके कामों की तरह

सामर्थ की निगाह से चेलों के काम उसकी सामर्थ के द्वारा ही किए जाने थे। ''जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा'' (14:13, 14)। अपने चेलों को यह बताना चाहता कि उन्हें अकेले ही उसके कामों को नहीं करना था। वे प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से सूझबूझ प्राप्त कर सकते थे। वे जब भी उससे मांगते तभी उससे पाते। उन्हें तो बस यीशु के नाम से मांगना होगा और जो भी उन्हें चाहिए होगा, वह मिल जाएगा।

यीशु का वायदा हम पर परोक्ष रूप में भी लागू होता है। अपनी महान आज्ञा देते हुए (मत्ती

28:18-20) यीशु ने अपने चेलों से यह वायदा किया कि जब वे सुसमाचार का प्रचार करने के लिए जाएंगे, वह हमेशा उनके साथ ही होगा। उसकी सामर्थ समझ और सहारा उसके पिता के पास वापस जाने के बाद सदा उनके साथ रहे और उसकी ईश्वरीय उपस्थिति हमारे साथ-साथ रहती है, जब हम उसका वचन अपने आस-पास दूसरों को सिखाते हैं।

सारांश

यीशु ने हमें और अपने चेलों को ऊपर अटारी पर बने कमरे में भविष्य में काम करने के लिए क्या प्रोत्साहन दिया! प्रभु के मानने वाले वही कार्य करेंगे, जो उसने किए, वो भी वैसे ही महान कार्य करेंगे जो उसने किए, वे उसकी सेवा के रूप में उसके काम करेंगे और वे उसकी सामर्थ से अपने काम करेंगे। उसके शब्द इन चलों की रात के परहेदार की तरह चौकसी करते हैं, यीशु के उन मानने वालों को अपनी ओर बुलाते हुए कि वे यीशु के आने तक ईमानदारी से उसके काम को करते रहें।

''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इफिसियों 2:8-10)।

''वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (याकूब 2:17)।